को अपना आज्ञाकारी सेवक बनाना चाहता है। श्रीभगवान् जीवों की इन्द्रियों को यथायोग्य तृप्त करते भी हैं, पर उनकी इच्छानुसार नहीं। इसके विपरीत, जो भक्त निजेन्द्रियतृप्ति की कामना से मुक्त होकर श्रीगोविन्द की इन्द्रियों को ही तृप्त करने में संलग्न रहते हैं, भगवत्कृपा से उनकी सर्वाभीष्ट-सिद्धि हो जाती है। कुटुम्ब और बान्धवों के प्रति अर्जुन का प्रगाढ़ स्नेह है—उनके लिए उसकी स्वाभाविक करुणा के रूप में यह सत्य यहाँ आंशिक रूप से प्रकट हुआ है। यही कारण है कि वह युद्ध से मुख मोड़ रहा है। कोई भी मनुष्य अपने वैभव का बन्धु-बान्धवों के आगे आडंबर करना चाहता है; पर अर्जुन को भय है कि उसके सब बांधव युद्ध में मारे जायेंगे, जिससे विजयी होकर अपने वैभव को वह उनके साथ नहीं भोग सकेगा। विषयी मनुष्य इसी प्रकार सोचता है। किन्तु पारमार्थिक जीवन का स्वरूप इससे सर्वथा भिन्न है। भक्त केवल भगवत्-इच्छा की पूर्ति करना चाहता है। अतः भगवत्-इच्छा होने पर वह भगवत्सेवा के लिये सारा वैभव स्वीकार कर सकता है और श्रीभगवान् की इच्छा न होने पर उसे तृण भी नहीं स्वीकार करना चाहिए। अर्जुन को स्वजन-वध करना अभीष्ट नहीं। यदि उनके वध की कोई आवश्यकता हो तो श्रीकृष्ण स्वयं उनका वध करें, ऐसा उसका भाव है। सम्प्रति, उसे नहीं पता कि उनके युद्धभूमि में आने से पूर्व ही श्रीकृष्ण उन सबका वध कर चुके हैं, उसे तो केवल निमित्त-मात्र बनना है। इस रहस्य का उद्घाटन अगले अध्यायों में होगा। स्वभावसिद्ध भक्त अर्जुन को अपने अत्याचारी भाइयों तक का प्रतिकार करना अप्रिय लग रहा है, परन्तु श्रीभगवान् की योजना है कि उन सबका वध हो। भगवद्भक्त पापाचारियों का भी प्रतिकार नहीं करता, परन्तु श्रीभगवान् को दुष्टों द्वारा भक्त का उत्पीड़न सहन नहीं होता। वे अपने अपराधी को तो क्षमा कर सकते हैं, पर भक्त का अपराधी उनके लिए कदापि क्षम्य नहीं हो सकता। इसी कारण, यद्यपि अर्जुन दुष्टों को क्षमा करना चाहता है, पर भगवान् श्रीकृष्ण उनके वध के लिए कृतसंकल्प हैं।

पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ।
तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ।।३६।।

पापम्=पाप को; **एव**=ही; **आश्रयेत्**=प्राप्त होंगे; **अस्मान्**=हम; **हत्वा**=मार-कर; **एतान्**=इन; **आततायिनः**=आततायियों को; **तस्मात्**=अतः; **न अर्हाः**=योग्य नहीं है; **वयम्**=हम; **हन्तुम्**=मारने को; **धार्तराष्ट्रान्**=धृतराष्ट्रपुत्रों को; **स्वबान्धवान्**=अपने बन्धु; **स्वजनम्**=बन्धुओं को; **हि**=क्योंकि; **कथम्**=कैसे; **हत्वा**=मार कर; **सुखिनः**=सुखी; **स्याम**=होंगे; **माधव**=हे लक्ष्मीपति कृष्ण।

अनुवाद

ऐसे आततायियें का वध करने पर भी हम पाप को ही प्राप्त होंगे। इसलिए अपने बन्धु धृतराष्ट्र-पुत्रों की हत्या करना हमारे योग्य नहीं है। हे माधव ! स्वजनों के